129 - स्तोकान्तिक दूरार्थ - कृच्छ्राणि क्तेन - 2/1/39

यह विधिसूत्र है। इस सूत्र का अर्थ है कि यदि स्तोक, अन्तिक (निकट) दूरार्थ (दूर के अर्थ में) तथा कृच्छ्र (कष्ट) इन चार प्रातिपदिकों के साथ यदि 'क्त' प्रत्यय से अन्त होने वाले सुबन्त पद आते हैं तो उनका तत्पुरुष समास होता है। यथा - स्तोकमुक्तः - लौ० वि० - स्तोकाद् मुक्तः अ० वि० - स्तोक + ङसि, मुक्त + सु।

'स्तोकान्तिक दूरार्थ - कृच्छ्राणि' सूत्रानुसार पञ्चम्यन्त स्तोकाद् सुबन्त पद का क्त प्रत्ययान्त 'मुक्तः' सुबन्त के साथ समास हुआ। 'कृत्तद्धित समासाश्च' से उसकी प्राति० संज्ञा, 'सुपो धातु प्राति०' से 'ङसि' और 'सु' विभक्ति का लोप हुआ - स्तोक + मुक्त, 'प्रथमा निर्दिष्टं...' से उपसर्जन संज्ञा, 'उपसर्जनं...' से उसका पूर्वनिपात, पुनः प्राति० संज्ञा एवं स्वादि कार्य होकर 'स्तोकमुक्तः' रूप सिद्ध हुआ।

130 पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः - 6/3/2

यह विधि (निषेध) सूत्र है। सूत्र का अर्थ है कि यदि पञ्चम्यन्त स्तोक, अन्तिक, अभ्यास, दूर और कृच्छ्र इन पदों के उत्तरवर्ती पद होते हैं तो पञ्चमी पद का लोप नहीं होता है। यथा - स्तोकान्मुक्तः - स्तोकात् मुक्तः (लौ० वि०) अ० वि० - स्तोक + ङसि, मुक्त + सु।

पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः सूत्रानुसार - पञ्चम्यन्त स्तोकान् का यथास्वरूप रहने या होनेवाले पंचमी के लोप का निषेध होकर स्तोका-मुक्तः रूप हुआ - Same as स्तोकमुक्तः (बाकी के सूत्र पूर्ववत् प्रयोग में आएंगे।)

{ अन्तिकादागतः - अन्तिकाद् - आगतः Same as
{ अभ्यासादागतः, दूरादागतः, कृच्छ्राद्‌गतः स्तोकान्मुक्तः

Scanned with CamScanner

931 षष्ठी - 2।2।8

यह विधि सूत्र है। इसका अर्थ है कि षष्ठ्यन्त सुबन्त पद का सुबन्त पद के साथ समास होता है। वह षष्ठी तत्पुरुष समास कहलाता है। यथा - राजपुरुषः - लौ० वि० - राज्ञः पुरुषः अ० वि० - राजन् + ङस् + पुरुष + सु।

'षष्ठी' सूत्रानुसार षष्ठ्यन्त 'राज्ञः' पद का 'पुरुषः' पद का समास हुआ। 'कृत्तद्धित०' से इसकी प्राति० संज्ञा। 'सुपो धातु..' से विभक्ति का लोप, 'प्रथमा निर्दिष्टं..' से उपसर्जन संज्ञा एवं 'उपसर्जनं..' से पूर्वनिपात - राजन् + पुरुष, 'न लोपो प्रातिपदिकान्तस्य' से 'राजन्' के 'न्' का लोप होकर राज + पुरुष रहा, पुनः प्राति० संज्ञा और स्वादि कार्य होकर 'राजपुरुषः' रूप सिद्ध हुआ।

932. पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे' - 2।2।1

यह विधिसूत्र है। यह 'षष्ठी' का बाधक सूत्र है। इसमें 'एकदेशी' का अर्थ 'अवयवी' है। सूत्र का अर्थ है - पूर्व, अपर, अधर, उत्तर इन अवयववाचक सुबन्त पदों का एक अवयववाची पद के साथ तत्पुरुष समास होता है। यथा - पूर्वकायः - लौ० वि० - पूर्वं कायस्य - अ० वि० - पूर्व + अम् + काय + ङस्। 'पूर्वापर...' से समास - 'स्वौजस...' तक 'सुप्' होकर पूर्वकायः।

अपरकायः - लौ० वि० अपरं कायस्य, अ० वि० - अपर + अम् - काय + सु।

हरेक रूपसिद्धि को सूत्रों के प्रयोग से पूरा - पूरा लिखकर सिद्ध करें।

{ यदि स्पष्ट न हो तो
प्रश्न अवश्य करें।

UMA PATHAK
Dept. of SKT.

Scanned with CamScanner